बेटा-बेटी एक समान, दोनों हैं भारत की शान

पूनम तंवर*

आँखों के लिए फूल-सी होती हैं बेटियाँ
मुट्ठी भर नीर सी होती हैं बेटियाँ
कोई नहीं एक दूसरे से कम
हीरा है अगर बेटा, तो सच्चे मोती हैं बेटियाँ

'बेटा-बेटी एक समान' ये नारा पूर्ण होते हुए भी तब अपूर्ण लगता है, जब स्वयं माता-पिता अपने बच्चों में भेदभाव करते हैं। यदि हम अपनी पारिवारिक सोच को नहीं बदल सकते तो समाज भले ही ऐसे लाखों नारे बना दे, पर उनका शून्य मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ेगा। वे सिर्फ मनोरंजन का साधन या रैली का माध्यम बनकर रह जाएँगे।

बेटा-बेटी दोनों ही घर का चिराग होते हैं। ये बात वही व्यक्ति सही अर्थों में समझ पाता है जो संतानहीन होता है। पर कुछ लोग अपनी घटिया सोच के कारण सृष्टि की इस अनुपम भेंट को अस्वीकार कर, जीवन भर कुण्ठा व घृणायुक्त जीवन बिताते हैं। ऐसे लोगों का तो संतानहीन होना ज्यादा बेहतर होगा। कम से कम हमारे अपने शरीर से उत्पन्न अंश को दुत्कारा तो नहीं जाएगा। हम अपराध बोध मुक्त रहेंगे। पर सभी की सोच हम जैसी हो, ऐसा तो कभी हो नहीं सकता। यदि ऐसा होता तो बेटी को जन्म देने के बाद कोई माँ स्वयं को अपराधी न समझती और उसका पारिवारिक जीवन दुखद नहीं सुखद व रंगीन होता। समाज में फैली इन दूषित अवधारणाओं का मुख्य कारण यह है कि हम एक ऐसे समाज का हिस्सा हैं जो लड़की को सर्वगुणसंपन्न व सर्वोपरि तो मानता है पर हृदय से स्वीकारता नहीं है। कहीं न कहीं हृदय के किसी कोने में वह यह महसूस करता है कि बेटा ही बेटी से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, बेटा-बेटी को समान महत्त्व न देने के अनेक कारण हो सकते हैं, जैसे-

समाज का अशिक्षित होना

यदि हम जीवन के धरातल पर देखें तो लड़की अपने अधिकारों के लिए लड़कों की अपेक्षा अधिक संघर्ष कर रही है। भारतीय समाज शिक्षित होते हुए भी अशिक्षित है, क्योंकि उसकी सोच पूर्णतया अनपढ़ है तथा विचार दकियानुसी हैं। परंतु यदि देखा जाए तो यह अंतर केवल प्रजननतंत्र का ही है। नारी बेटी होते हुए भी अपनी कोख से बेटे को ही जन्म देना चाहती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने सालों के बाद भी हम परम्पराओं व कुप्रथाओं का शिकार बने हुए हैं। हमारा समाज सिर्फ नारे लगाना, भाषण गोष्ठियाँ करना तो जानता है पर स्वयं इस तथ्य को स्वीकारता नहीं है।

बेटी को सम्मान तथा उसे बेटे के बराबर का दर्जा हम तभी दे पाएँगे जब हम ये फर्क अपने परिवार से मिटाने में सक्षम होंगे और समाज तथा राष्ट्र से इस भेद को हमेशा के लिए मिटाएँगे। शायद तभी हम आधुनिक बन पाएँगे।

जब तक हम बेटियों को बोझ व बेटे को स्वयं का पालनहार समझेंगे, तो हम हमेशा अपनी ही बनाई जंजीरों में कैद रहेंगे, जो हमें कभी भी चैन से जीने नहीं देंगी, जो सिसकियाँ बन हमें बेचैन करेंगी। चाहकर भी हम इनसे मुक्त नहीं हो पाएंगे। इस प्रकार हम स्वयं के बनाए इस चक्रव्यूह में कैद रहेंगे।

* प्राचार्या, द हौराइजन इंटरनेशनल स्कूल
पानीपत, हरियाणा।

नारी ही नारी की दुश्मन

भारतीय समाज में बेटा-बेटी एक समान न होने का मुख्य कारण किसी हद तक नारी भी है। केवल पुरुषों को दोषी मानना पूर्णतया गलत होगा। भले ही नारी की गुणवत्ता, उसका शौर्य, तथा शक्ति क्षितिज को छू रही है, पर उसके अंदर छिपी नारी सदैव दूसरी नारी से घृणा करती है।

वह कभी भी नहीं चाहती कि उसकी कोख से बेटी पैदा हो। वह सदैव पुत्रवती बनने की कामना करती है, इस संसार में कोई ऐसी नारी नहीं हुई जिसने कभी ईश्वर से संतान के रूप में बेटी की कामना की हो। यह समाज की एक ऐसी विडंबना है कि जीवनदायिनी होते हुए भी नारी का जीवन सुरक्षित नहीं है उसे अपने द्वारा बनाए रिश्ते कैद लगते हैं। नारी ही नारी की दुश्मन बनी हुई है। वह अपने से ऊपर उठती नारी को देखकर घृणा का शिकार हो जाती है तथा उसे नीचा दिखाने की भरपूर कोशिश करती है। वह सदैव पति व पुत्र की ही कामना करती है। हमें अपनी सोच को बदलना होगा तभी हम इस नारे का महत्त्व सिद्ध कर पाएंगे।

''बातें बनाना है बहुत आसान, बेटियों को दीजिए सम्मान।
बेटा-बेटी एक समान दोनों से ही होगा खुशहाल जहान।।''

बलात्कार जैसी घटनाएं

बलात्कार एक ऐसी घटना है जिसे सोचकर रूह काँप जाती है। जरा सोचिए ये घटना यदि हमारे बच्चों के साथ घटे तो क्या हम सह पाएँगे। आज हमारी बेटियाँ अपने ही रिश्तों के बीच सुरक्षित नहीं हैं। हैवानियत भरी निगाहें उन्हें हर समय निहारती रहती हैं। ये एक ऐसा दर्दनाक दृश्य होता है, जिसे देखकर हर कोई ये सोचने पर मजबूर हो जाएगा कि संतान पैदा ही न करे, यदि हमारे बच्चे सुरक्षित ही नहीं रहेंगें तो वो जीएँगे कैसे? कुछ अनचाहे हाथ उन्हें हर समय दबोचने को तत्पर रहते हैं। बेटियाँ चाहे आसमान की ऊचाईयों को छू लें, पर कुछ हाथ कुछ गंदी निगाहे उन्हें हैवानियत भरी नजरों से निहारती ही रहती हैं। यही मुख्य कारण है कि माँ बेटी को जन्म देने से डरती है। कुछ ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं जो उनकी खुशहाल जिन्दगी को एक बदनुमा दाग बना देती है। यदि ये सारी घटनाएँ न हो तो हमारी संतान सुरक्षित रहेगी और तभी बेटा-बेटी एक समान समझे जाएंगें।

दुख के बादल छट जाएँगे बेटी की इक किलकारी से,
ये जूही, चमेली, चंपा सी महके घर की फुलवारी में।

कुछ अथक प्रयासों के द्वारा हम बेटा-बेटी की इस खाई को हमेशा-हमेशा के लिए मिटा सकते हैं और अपनी संतानों को सुनहरा भविष्य दे सकते हैं, वे कुछ पहलू इस प्रकार हैं-

पारिवारिक सोच बदलकर : परिवार प्रत्येक बच्चे की प्रथम पाठशाला होता है। यदि परिवार उसे एक दृढ़ सोच प्रदान करे तो वह बच्चा कभी पथ भ्रष्ट नहीं होगा। यदि हम अपने बच्चों को उनकी अहमियत तथा महत्त्व समझाएंगें तो शायद वे कोई भी गलत कदम उठाने से पहले अवश्य सोचेंगे। अपनी सोच बदलकर हम 'बेटी-बेटा एक समान' के नारे को सार्थकता प्रदान करने में अपना सहयोग दे सकते हैं। यदि परिवार में बच्चे माता को पिता का सम्मान करते और पिता को माता का सम्मान करते देखेंगे तो वे भी वैसा ही व्यवहार अपनाएंगे।

शिक्षा व संस्कारों के द्वारा समाज की सोच में बदलाव : शिक्षा व संस्कार दो ऐसे स्तम्भ होते हैं, जो बच्चों को एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं। बेटियों और बेटों को समान भाव रखते हुए यदि हम उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करेंगे तो अवश्य ही बेटा-बेटी के इस भेद को मिटाने में सफल होंगे।

यदि भाई-बहन, पिता-बेटी, माता-पिता के रिश्ते मजबूत होंगे तो हम नारी को बेटी, बहन, माँ तथा पत्नी के रूप में सम्मान से स्वीकार कर सकेंगे और तब प्रत्येक माँ बेटा हो या बेटी, अपनी हर संतान को पैदा कर गौरव तथा सुरक्षा का अनुभव करेगी। तभी हम इस नारे को सार्थक व मजबूत आधार दे सकेंगे।

सरकार द्वारा ठोस कदम उठाने पर भी हम इस भेद को सफलतापूर्वक मिटा सकते हैं। वैसे तो सरकार बेटियों की सुरक्षा को लेकर अनेक कानून बना रही है पर वो तभी सार्थक होंगे जब सारा समाज अपनी सोच बदलकर दोनों को समान समझेगा तथा अपने बच्चों को आत्मनिर्भर बनने में उनका भरपूर सहयोग करेगा। तभी हम और आप अच्छे अभिभावक होने का दावा कर सकेंगे। अंत में मैं बेटा-बेटी एक समान मानते हुए सभी पाठकों से करबद्ध निवेदन करती हूँ-

अनुरोध मेरा स्वीकार करो,
जितना बेटे से करते हो,
उतना बेटी से प्यार करो।

❑❑❑❑